

● पढ़ो, समझो और गाओ :

द. जीवन नहीं मरा करता है

- गोपालदास सक्सेना 'नीरज'

जन्म : ४ जनवरी १९२४, पुरावली, इटावा (उ.प्र.) **रचनाएँ :** बादर बरस गयो, नीरज रचनावली, नीरज की गीतिकाएँ, दर्द दिया है ।

परिचय : पद्मभूषण गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी कवि सम्मेलनों के मंचों पर काव्य वाचक एवं विख्यात गीतकार हैं ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने विविध उदाहरणों के माध्यम से जीवन की समस्याओं और इनकी शाश्वतता की ओर संकेत किया है ।



जरा सोचो चर्चा करो

यदि सूर्य प्रकाश न होता तो इनपर क्या प्रभाव पड़ता ?

वनस्पति

पशु-पक्षी

मानव

छिप-छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है ।

माला बिखर गई तो क्या है
खुद ही हल हो गई समस्या,
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई तपस्या,

रूठे दिवस मनाने वालो !
फटी कमीज सिलाने वालो !
कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है ।

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती,

वस्त्र बदल कर आने वालो !
चाल बदल कर जाने वालो !
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है ।

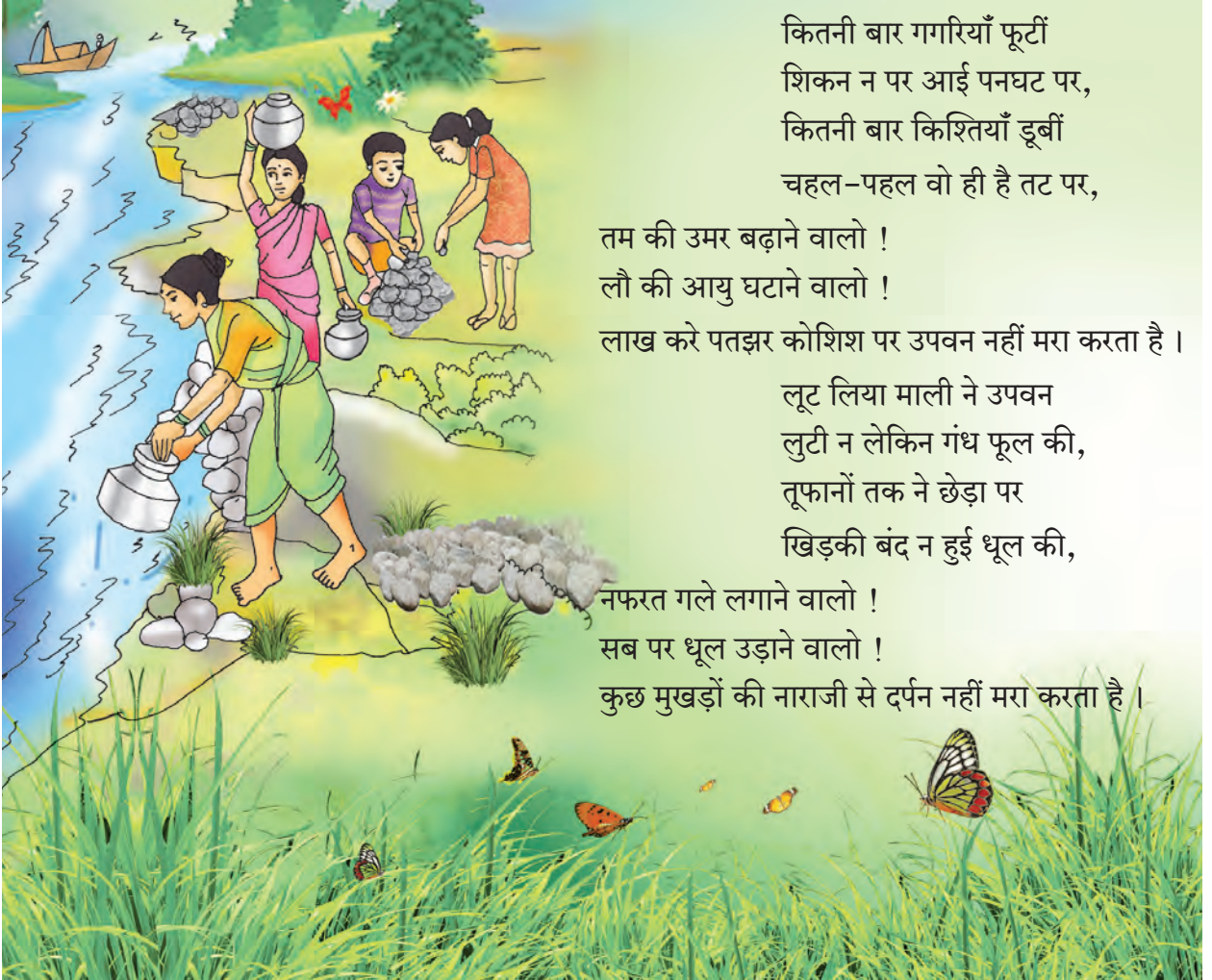


- उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता सुनाएँ । विद्यार्थियों से कविता का व्यक्तिगत, सामूहिक, गुट में गायन करवाएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता की कौन-सी पंक्ति उन्हें अच्छी लगी, पूछें एवं कारण बताने हेतु प्रेरित करें ।



सुनो तो जरा

ई न्यूज, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य प्रसार माध्यमों आदि से समाचार पढ़ो/सुनो और मुख्य बातें सुनाओ।



कितनी बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न पर आई पनघट पर,
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं
चहल-पहल वो ही है तट पर,

तम की उमर बढ़ाने वालो !

लौ की आयु घटाने वालो !

लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की,

नफरत गले लगाने वालो !

सब पर धूल उड़ाने वालो !

कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पन नहीं मरा करता है।



मैंने समझा

शब्द वाटिका



नए शब्द

नीलाम होना = बिक जाना

जिल्द = पुस्तक का बाह्य आवरण

शिकन = सिलवट, चिंता

पनघट = वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते हैं

मुहावरा

गले लगाना = प्यार से मिलना

किश्ती = नाव

तम = अंधकार

पतझर = पत्ते झरने की ऋतु

मुखड़ा = चेहरा



अध्ययन कौशल

सौरऊर्जा पर टिप्पणी तैयार करो
और पढ़ो :



www.seci.gov.in



मेरी कलम से

निम्नलिखित शब्द की सहायता से नए शब्द बनाओ :



विचार मंथन

॥ जीवन चलता ही रहता ॥



सदैव ध्यान में रखो

कालचक्र निरंतर गतिमान है ।

१. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखो :

- (क) 'लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है ।'
 (ख) 'कितनी बार गगरियाँ फूटीं शिकन न पर आई पनघट पर ।'

२. इस कविता का मुख्य आशय लिखो ।

३. जीवन की शाश्वतता को बताने वाली पंक्तियाँ लिखो ।



भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :

() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, { } मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()

क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

छोटा कोष्ठक ()

- १) सागर - (आश्चर्य से) आप सब मेरा इंतजार कर रहे हैं !
 २) निम्न प्रश्न हल करो :
 (अ) १५×२६ (ब) $६०० \div १५$

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []

१. रवींद्रनाथ ठाकुर का अनुवादित [अनूदित] साहित्य सब पढ़ते हैं ।
 २. देखो, आपका पत्र [नमूना (ड)] के अनुसार होना चाहिए ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []

लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं ।

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक { }

- (१) { गोदान } प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं ।
 { निर्मला }
 { गबन }
 (२) { तुलसीदास } महाकवि माने जाते हैं ।
 { कालिदास }

हंसपद ^

- सुंदर
 १) अस्मि ने ^ भेंटकार्ड बनाया ।
 २) पिता जी कले ^ आएँगे ।

उचित विराम चिह्न लगाओ :

१. कामायनी महाकाव्य कवि जयशंकर प्रसाद
 २. विशाखा लंदन से दिल्ली आती है हवा जैसी आने की सूचना नहीं देती ।
 ३. बालभारती हिंदी की पुस्तकें हैं ।
 ४. किसी दिन हम भी आपके घर आएँगे ।



L3A1EU

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक { }

एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए { } इसका प्रयोग करते हैं ।

हंसपद ^

लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।